❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा न इन्द्र परा वृणक्।

सामवेद 260

हे परमैश्वर्यशाली परमात्मन्! हमारा त्याग मत करो।

O Bounteous Lord! Kindly do not forsake us.

वर्ष 39, अंक 43 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 29 अगस्त, 2016 से रविवार 4 सितम्बर, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पोप द्वारा मदर टेरेसा को संत की उपाधि प्रदान करना – एक षड्यन्त्र

चमत्कार नाम के नाम पर संत की उपाधि देना : धर्मान्तरण को प्रोत्साहित करना

चमत्कार जैसे अन्धविश्वास को बढ़ावा देना – भारतीय संविधान का अपमान : सरकारी प्रतिनिधि मंडल का इस प्रक्रिया में सम्मिलित होना एक गलत परम्परा को जन्म देगा

भारत सरकार एवं राजनेताओं से इस प्रक्रिया से अलग रहने की की अपील

4 सितम्बर, 2016 को वेटिकन में मदर टेरेसा को संत घोषित करने के लिए आयोजित होने वाले कार्यक्रम में भारत की विदेश मन्त्री सुषमा स्वराज 12 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व करेंगी। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी रोम की यात्रा करेंगे। मार्च में पोप फ्रांसिस ने घोषणा की थी कि मिश्नरीज आफ चैरिटी की स्थापना करने वाली मदर टेरेसा को संत घोषित किया जाएगा। इससे पहले उनके निधन के बाद 1997 में गिरजाघर ने उनसे जुड़े दो चमत्कार की पहचान की थी। इसमें बताया गया था कि मदर टेरेसा के प्रभाव से दो रोगियों की असाध्य बीमारी ठीक हो गई है। इसलिए उनको सन्त घोषित किया जा सकता है। तथाकथित रूप से चली एक लम्बी प्रक्रिया के पश्चात् उनको संत की उपाधि से विभूषित किया जा रहा है। प्रश्न यहां पर यह है कि इस विज्ञान और आधुनिकता के जमाने में इस तरह के चमत्कारों से भोली-भाली गरीब जनता को बहलाना क्या उचित होगा?

इसलिए आर्यसमाज का आह्वान है कि सरकार और राजनेता अपने आपको इस प्रक्रिया से दूर रखे और इस प्रकार के अंध विश्वास के खेल में शामिल न हो। किसी भी सरकारी प्रतिनिधि मंडल का इस प्रक्रिया में सम्मिलित होना एक गलत परम्परा को जन्म देगा।

मदर टेरेसा के चमत्कारों के बारे में बताया गया है कि उनके प्रभाव से दो रोगियों की असाध्य बीमारी ठीक हो गई है। इसलिए उनको संत घोषित किया जा सकता है। तथाकथित रूप से चली एक लम्बी प्रक्रिया के पश्चात् उनको संत की उपाधि से विभूषित किया जा रहा है।

प्रश्न यहां पर यह है कि इस विज्ञान और आधुनिकता के युग में इस तरह के चमत्कारों से भोली-भाली गरीब जनता को बहलाना क्या उचित होगा?

इसलिए आर्यसमाज का आह्वान है कि सरकार और राजनेता अपने आपको इस प्रक्रिया से दूर रखे और इस प्रकार के अंध विश्वास के खेल में शामिल न हो।

मदर टेरेसा को अब रोमन कैथोलिक चर्च का संत घाषित किया जाएगा। वैसे चमत्कार पर विश्वास भारत के मूल सविंधान के खिलाफ है और भारत सरकार का इसमें सम्मिलित होना एक गलत परम्परा को भी जन्म देगा, क्योंकि जिस आधार पर मदर टेरेसा को चमत्कारिक संत घोषित किया जा रहा है वह भारत जैसे देश में अन्धविश्वास को बड़े पैमाने पर बढ़ावा देने वाला कदम है।

सरकार द्वारा अपने लोगों के साथ यह एक धार्मिक व्यंग है कि भारतीय संतों की दुनिया में एक विदेशी ब्रांड संत जल्दी आने वाली है। अभी तक भारतीय धर्म नगरी देशी संतो से सराबोर थी।

– शेष पृष्ठ 5 पर

......मदर टेरेसा ने 1989 में टाइम मैगजीन को दिए एक इंटरव्यू में कहा – भारत में सब लोगों तक जीसस को पहुंचाना ही हमारा लक्ष्य है। देखिए –
प्रश्न– भगवान् ने आपको सबसे बड़ा तोहफा क्या दिया है?
मदर टेरेसा– गरीब लोग।
प्रश्न– भारत में आपकी सबसे बड़ी उम्मीद क्या है?
मदर टेरेसा–जीसस को सब लोगों तक पहुंचाना। ....

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल : 20-22 अक्टूबर 2016 : तैयारियां जोरों पर

नेपाल पहुंचे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी

सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, मन्त्री प्रकाश आर्य एवं उपमन्त्री श्री विनय आर्य ने की सम्मेलन संयोजक श्री माधव प्रसाद आर्य, डॉ. तारानाथ मैनाली तथा स्थानीय संगठनों के पदाधिकारियों के साथ बैठकें

नेपाल सम्मेलन को लेकर देश-विदेश के आर्यजनों में भारी उत्साह

मॉरिशस से सौ से अधिक आर्यजनों की पहुंचने की सूचना : पंजीकरण की तिथि को आगे बढ़ाया

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के तत्त्वावधान में

प्रान्तीय विशाल आर्य महासम्मेलन : 17-18 सितम्बर, 2016 (शनि-रवि)

स्थान : आर्यसमाज सुन्दर नगर कालोनी ★ यज्ञ : प्रातः 8-9 बजे ★ ब्रह्मा : आचार्य आर्य नरेश जी

★ राष्ट्र चेतना सम्मेलन ★ भव्य शोभायात्रा ★ राष्ट्र रक्षा सम्मेलन ★ आर्य महासम्मेलन★ आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर

निवेदक :

प्रबोधचन्द्र सूद (प्रधान)	रामफल सिंह आर्य (महामन्त्री)	बलदेव सिंह रंगा (कोषाध्यक्ष)	श्रवण कुमार आर्य (संचालक, आर्य वीर दल)

वेद-स्वाध्याय

इन्द्रियों की चंचलता भक्ति में बाधक

वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुः वि३दं ज्योतिर्हृदय आहितं यत्।
वि में मनश्चरति दूर आधीः किं स्विद् वक्षयामि किमु नू मनिष्ये।। -ऋ. 6/9/6
ऋषिः भारद्वाजो बार्हस्पत्यः।। देवता-वैश्वानरः।। छन्दः त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ- मे कर्णा वि पतयतः=मेरे दोनों कान इधर-उधर जा रहे हैं **चक्षुः वि**=मेरी आँख इधर-उधर विविध स्थानों पर पड़ रही है **हृदये आहितं यत् ज्योतिः (तत्) इदं वि**=हृदय में स्थापित जो यह ज्ञानरूप ज्योति है वह भी विविध स्थानों पर दौड़ रही है **मे मनः दूरे आधीः विचरति**=मेरा मन दूर-दूर चिन्ता के विषयों में विचरण करता रहता है। ऐसी अवस्था में हे प्रभो! **किं स्वित् वक्ष्यामि**=मैं क्या बोलूँगा, या क्या उत्तर दूँगा? **किम् उ नु मनिष्ये**=और मैं क्या मनन करूँगा या क्या अभिमान कर सकूँगा?

विनय- हे प्रभो! मैं चाहता हूँ कि बिल्कुल एकाग्र होकर अपनी मानसिक वाणी द्वारा तेरा नाम जपूँ या तेरा मनन करूँ, तेरा ध्यान करूँ, परन्तु जब मैं ऐसा करने के लिए बैठता हूँ तो कुछ भी शब्द सुनाई पड़ते ही मेरे कान यहाँ-वहाँ दौड़े जाते हैं, आँखों के सामने कुछ भी आते ही मैं यहाँ-वहाँ देखने लगता हूँ। कभी कान कुछ सुनने लगते हैं, कभी आँखें कुछ देखने लगती और यदि मैं किसी ऐसे स्थान पर जाकर बैठता हूँ जहाँ शब्द और रूप आ ही न सकें, तो भी मैं देखता हूँ कि मेरा मन अन्दर-ही-अन्दर सब-कुछ देखता-सुनता रहता है। दिन-रात की किसी बात का स्मरण आते ही मन यहाँ-वहाँ भाग जाता है और इधर-उधर की बातें सोचने लगता है। तब पता लगता है कि मेरा मन कितनी दूर पहुँचा हुआ है और यदि किसी दिन कोई मन पर चोट लगनेवाली बात हो चुकी होती है तब तो मन बार-बार वहीं पहुँचता है-रोकने का बड़ा यत्न करने पर भी क्षण-क्षण में वहीं जा पहुँचता है। मेरे हृदय में जगनेवाली यह ज्योति भी-जो वातरहित स्थान में रखे हुए दीपक की शिखा की भाँति बिल्कुल अनिङ्गित, बिल्कुल न हिलती हुई, एकरस जलती हुई रहनी चाहिए- वह ज्योति, वह ज्ञान-ज्योति भी सदा इधर-उधर हिलती रहती है, मनोवृत्तियों की हवा लगते रहने से हिलती रहती है। तो फिर मैं तेरा ध्यान कैसे कर सकता हूँ? एकाग्रता से तेरा नाम कैसे जपूँ? तेरा मनन कैसे करूँ? और यदि प्रतिदिन तेरा इतना भी भजन न कर सकूँगा तो उस दिन, जबकि मेरी यह जीवनसाधना समाप्त होगी, उस दिन तुम्हें क्या उत्तर दूँगा? तुम्हारे सामने किस बात का अभिमान कर सकूँगा? यह जीवन, ये सब ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ, तुमने मुझे तुम्हारे समीप पहुँचने की साधना ही के लिए दी हैं। तो उस दिन, जब तुम यह शरीर वापस माँगोगे, तब मैं तुम्हें क्या उत्तर दूँगा? क्या मुँह दिखलाऊँगा? हे प्रभो! शक्ति दो कि मेरे मन की आज्ञा के बिना मेरे ये कान, आँख आदि कहीं न जा सकें और यह मन भी हृदय की ज्योति के साथ मिल जाया करे-ज्योति एक-रस जगती रहे। ऐसी अवस्था दिन में दो बार सन्ध्योपासना के समय हो जाया करे, नहीं तो मैं क्या मुँह दिखाने लायक रहूँगा?

- साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

भारतीय नारी की जरूरत दरगाह या?

आखिर कौन है तृप्ति देसाई जो यकायक धर्म के नाम पर महिलाओं को अन्धविश्वास में भागीदारी दिलाने चली है। जहाँ आज उसे अच्छी शिक्षा, रोजगार, सम्मान की दरकार थी घरेलू व् सामाजिक शोषण से बचाना था। वहां ये लोग फिर उसे उस ओर खींच रहे है जहाँ से वे सदियों पहले दासता का शिकार होकर आई थी? जैसा की पूर्व अनुमान था वही हुआ, बम्बई उच्च न्यायालय द्वारा हाजी अली दरगाह में मजार के पास महिलाओं के प्रवेश पर रोक हटाने के दो दिन बाद भूमाता ब्रिगेड की कार्यकर्ता तृप्ति देसाई दरगाह पहुंचीं और एक चादर चढायी। हम प्रार्थना, पूजा, आस्था उपासना के विरोधी नहीं पर अंधविश्वास के विरोधी जरूर हैं। किन्तु कुछ चीजों पर न चाहते हुए भी टिप्पणी करना आवश्यक होता है। हम भारतीय बड़े अजीब हैं। वर्ष 2015 में हम मंगल ग्रह की परिधि में गये थे, जोकि हमारे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी, तो इस वर्ष हम दरगाह में पहुँच गये! अब ये नहीं पता इसे उपलब्धि कहें या अंधविश्वास? जिस समय पूरा विश्व विज्ञान के साथ आगे बढ़ रहा है उस समय हम पीर, मजारों, दरगाहों में उलझे हैं, इससे क्या हासिल होगा? दरगाह से पुरुषों ने ऐसा क्या हासिल किया जो अब महिलाएं कर लेंगी? उल्टा राजस्थान मई माह में जावरा अबुसईद दरगाह परिसर से शुक्रवार रात एक युवती लापता हो गई। दूसरा हाल ही में बदायूं दरगाह पर चादरपोशी करने के बाद रूबी और उसके परिवार की लाशें मिलने का मामला उलझता जा रहा है। तीसरा पानीपत कलंदर दरगाह पर चादर चढ़ाने गयी गुरुग्राम की लड़की लापता, लड़की की मां ने कथित तांत्रिक पर अपहरण का आरोप लगाया है। न जाने ऐसे कितने केस हर महीने पुलिस की फाइल में दर्ज होते है। किन्तु इसके बाद भी मरकर दफन हुए लोगों की दरगाह में जाने वाले लोगों की कोई कमी नहीं है।

क्या आज भी महिलाएँ इस बात को समझने में असमर्थ हैं कि अंधविश्वास महिलाओं को पुरुषवादी बंधनों में बाँध कर रखने का एक कारगर अस्त्र है? क्या एक नारी की चिंताओं पर तृप्ति देसाई द्वारा दिखाई जाने वाली चिन्ताओं का वास्तव में कोई अर्थ है? कहीं ऐसा तो नहीं कि वह किसी एनजीओ के लिए पैसा और खुद के लिए सस्ती लोकप्रियता तो नहीं बटोर रही है? क्योंकि यदि तृप्ति इतनी ही धार्मिक है तो एक बार शनि शिगणापुर के मन्दिर में जाकर वहां आज तक दुबारा नहीं गयी क्यों? या वह सिर्फ आज की नारी को अंधविश्वास की गर्त में धकेल रही है? क्या यही कारण तो नहीं कि वैदिक काल में अपनी विद्वत्ता के लिए सम्मान पाने वाली नारी मुगलकाल में रनिवासों की शोभा बनकर रह गई थी? इन सवालों को उठाने का मेरा उद्देश्य इस मुददे पर खुलकर बात करना है। धार्मिक अंधविश्वास किसी भी नारी की गुलामी का सबसे प्राचीन दस्तावेज है। जहाँ भी वो अंधविश्वास की पकड़ से बाहर होगी, वहां वह शिक्षित होगी, उसका सम्मान होगा, वो सामाजिक विकास की मुख्यधारा में होगी। यदि कहीं उसका शोषण है या हो रहा हो उसका सिर्फ एक कारण है कि वह अंधविश्वास में लिप्त हैं। मुझे नहीं पता महिलाओं में धार्मिक भावनाएँ ज्यादा गहरी होती हैं या नहीं किन्तु इतना पता है कि उसे उसके मूल उद्देश्यों से भटकाकर लोग अपने विश्वास-अंधविश्वास की और मोड़ते जरुर आये हैं! मध्यकाल में विदेशियों के आगमन से स्त्रियों की स्थिति में जबरदस्त गिरावट आयी। अशिक्षा और रुढ़िवादिता में जकड़ती गई, घर की चार दीवारी में कैद होती गई और नारी एक अबला, भोग्या और शोषण का वस्तु बनकर रह गई। आर्य समाज ने नारी शिक्षा आदि के लिए प्रयास आरम्भ किये। उन्नीसवीं सदीं के पूर्वार्द्ध में स्वामी दयानन्द सरस्वती, के साथ अन्य लोगों ने मिलकर अत्याचारी सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठायी। उसे काफी हद तक मुक्त किया। उसे उसका असली सम्मान दिलाने का काम किया जिस कारण वह काफी हद तक समर्थ हुई। पर अब अचानक पिछले कई रोज से भारतीय मीडिया खुश दिखाई दे रहा है। जैसे दरगाह में जाने से महिला कोई बड़ी जंग जीत गयी हो। जबकि मैं इसे उसकी हार कहूँगा! इस बात से कतई इंकार नहीं किया जा सकता कि आजाद भारत के 7 दशक में भारतीय महिलाओ ने बहुत महत्त्वपूर्ण और तर्कसंगत विकास किया है, परन्तु आज भी हमारे देश में कुछ ऐसी जगह है जहाँ महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक मानसिक कुरीतियों का सामना करना पड़ रहा है। जैसे - कई रोज पहले झारखण्ड राज्य से खबर आई थी कि गुमला जिले के पालकोट थाना क्षेत्र में डायन बिसाही के नाम पर पति-पत्नी और बच्चे की हत्या कर दी गई। वहीं सिमडेगा में बच्चा नहीं होने से परेशान युवक ने पड़ोस की महिला को डायन बता पीट-पीटकर मार डाला। चाहे भूत-प्रेत की घटनाएँ हों अथवा चुड़ैल जैसे मामले, सभी जगह पर यह देखने में आया है कि अंधविश्वास का शिकार ज्यादातर महिलाएं ही होती हैं। क्या कोई सोच सकता है कि बिना अन्धविश्वास से जूझे नारी का उत्थान हो सकेगा? वह जब-जब समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहती है तब-तब जाने कितने रीति-रिवाजों, परम्पराओं पौराणिक आख्यानों की दुहाई देकर उसे चुप या गुमनाम जीवन जीने पर विवश कर दिया जाता है। इसके बाद उसे विभ्रम बताया जाता है, उसे महान बताया जाता है, पर क्या जो लोग कमजोर होकर प्रताड़ना सहन करते है, जुल्म सहन करते है, वे महान कैसे होते हैं? सदियों से समय की धार पर चलती हुई नारी अनेक विडम्बनाओं और विसंगतियों के बीच जीती रही है। सभी रूपों में उसका शोषित और दमित स्वरूप सबके सामने है जैसे-जैसे समय आगे बढ़ रहा है वैसे-वैसे भारतीय नारी के भी कदम आगे बढ़ रहे हैं। आज वह 'देवी' नहीं बनना चाहतीं, वह सही और सच्चे अर्थों में अच्छा इंसान बनना चाहती है। उसके नैतिक मूल्यों और मानवीय मूल्यों को नकारा नहीं जा सकता। हमारे पारम्परिक चरित्र उसी के नैतिक मूल्यों की धरोहर हैं। अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिये संघर्ष करती हुई स्त्रियों ने लम्बा रास्ता तय कर लिया है, परन्तु आज भी एक बड़ा हिस्सा सदियों से सामाजिक अन्याय का शिकार है। हमारा मीडिया से अनुरोध है कि विसंगति से जूझती नारी के मुद्दे उठाकर उसका मार्गदर्शन करे न कि अन्धविश्वास में फंसाकर उसे शोषण की भूमि बनने दे।

- सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

पाकिस्तान में हिन्दू विवाह बिल पारित करने की ओर कदम

70 वर्ष बाद याद आया कि हिन्दू भी विवाह करते हैं !

पाकिस्तान में दर्शकों की देरी और निष्क्रियता के बाद हिंदू अल्पसंख्यक समुदाय के पास अब जल्दी ही एक विवाह कानून होगा। पाकिस्तान के संसदीय पैनल ने हिंदू विवाह विधेयक को मंजूरी दे दी है। नेशनल असेंबली की कानून एवं न्याय संबंधी स्थायी समिति ने सोमवार को हिंदू विवाह विधेयक, 2015 के अंतिम मसौदे को सर्वसम्मति से मंजूरी दे दी। इस पर विचार के लिए खास तौर पर पांच हिंदू सांसदों को पैनल ने आमंत्रित किया था। मतलब अब पाकिस्तान का हिन्दू अपनी पत्नी को सरकारी और गैरसरकारी मंचों पर अपनी पत्नी कह सकेगा। हिंदू समुदाय के लिए परिवार कानून तैयार करने में लंबे समय से रणनीतिक रूप से की गई देरी पर खेद जताते हुए संसदीय समिति के अध्यक्ष चौधरी महमूद बशीर विर्क ने कहा, देर करना हम मुसलमानों और खासकर नेताओं के लिए मुनासिब नहीं था। हमें कानून को बनाने की जरूरत थी न कि इसमें रुकावट डालने की। अगर 99 फीसदी मुस्लिम आबादी एक फीसदी हिन्दू आबादी से डर जाती है तो हमें अपने अंदर गहरे तक झांकने की जरूरत है कि हम खुद को क्या होने का दावा करते हैं और हम क्या हैं। इस कानून के मंजूर हो जाने के बाद जो कोई हिंदू विवाहिता का अपहरण करेगा, वह दंड का अधिकारी होगा क्योंकि पीड़िता का परिवार शादी का सबूत दिखा सकेगा।

पाकिस्तान में करीब 21 लाख से ज्यादा हिंदू रहते हैं जो पिछले 69 साल से अपनी शादियों को कानूनी मान्यता और उनके पंजीकरण के लिए विशेष कानून बनवाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। 13 अगस्त 1947 तक उपमहाद्वीप के बंटवारे के बाद, पश्चिमी पाकिस्तान या मौजूदा पाकिस्तान में, 15 प्रतिशत हिंदू बचे थे उससे पहले उन्हें वे सब अधिकार प्राप्त थे जो भारत में मुस्लिमों को हैं। पर मजहब का जहर पीने वालों ने 14 अगस्त 1947 से उनकी जिन्दगी को नरक से भी बदतर बना दिया। मानवाधिकार संगठनों का कहना है कि पाकिस्तान से पलायन या जबरन धर्मांतरण कर गई हिंदुओं की नब्बे प्रतिशत आबादी का कारण बढ़ती असहिष्णुता और सरकार की उदासीनता है। वर्ष 2012 में अमेरिका के कई प्रभावशाली सांसदों ने पाक के सिंध प्रांत में अल्पसंख्यक हिंदुओं की दुर्दशा पर गहरी चिंता जताई थी। उनका कहना था कि पाकिस्तान के इस प्रांत में हिंदुओं को कोई मौलिक अधिकार नहीं मिला है। पाक मानवाधिकार की स्थिति बदतर है। अमेरिकी संसद में सिंध में मानवाधिकार पर ब्रीफिंग के दौरान एक सांसद ने आरोप लगाए, सिंध का हिंदू समुदाय अपनी औरतों के जबरन इस्लाम में धर्मांतरित करने की लगातार आशंका में जीता है।

......वर्ष 2012 में हिन्दू लड़की रिंकल कुमारी का मामला अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गूंजा था लेकिन उसके बाद भी उसका धर्म परिवर्तन कराकर उसे मुसलमान बनाया गया इसके बाद नावीद शाह नाम के एक मुस्लिम युवक से उसकी शादी करा दी गई थी। उस समय रिंकल के वकील अमरलाल ने पत्रकारों के सामने दुखी मन से कहा था, कि कभी अनिता को बेचा जाता है, कभी जैकबाबाद से कविता को उठाकर ताकत के जोर पर मुसलमान किया जाता है, कभी सपना को उठाते हैं तो कभी पनो आकिल से पिंकी को ले जाते हैं। रिंकल अविवाहित थी लेकिन इसके बाद तो धारकी कस्बे से एक हिन्दू विवाहित महिला का अपहरण करके उसका जबरन धर्म परिवर्तन किया गया।.......

पाकिस्तान में हिन्दू लड़कियों का अपहरण करके उनकी शादी उनकी इच्छा के विरुद्ध मुस्लिम पुरुषों के साथ कराए जाना आम बात है। सिंध प्रांत में अल्प संख्यक हिन्दू समुदाय की महिलाओं और लड़कियों का अपहरण और बलात् धर्मान्तरण कराकर जबरदस्ती विवाह कराना एक आम बात हो चुकी है। आजादी के बाद के कुछ सालों से यह कुत्सित खेल बड़े पैमाने पर चल रहा है। ऐसी ही कुछ घटनाएँ हैं जो यह सोचने पर मजबूर करती है कि जो भारतीय मीडिया अखलाक, बुरहान वानी के परिवारों को लेकर रोता रहता है पर उनके कानों में पाकिस्तान में रह रहे हिन्दुओं की चीखें क्यों नहीं पहुँचती ? एक मुस्लिम परिवार को हिन्दू द्वारा किराये पर मकान न देने की बात हो तो तीन दिनों तक वह मुद्दा भारतीय मीडिया में छाया रहता है, जिसे लेकर धर्म को दोष एवं धार्मिक परतें खोली जाती हैं। किन्तु जब किसी मुस्लिम देश में अल्पसंख्यक हिन्दू पर अत्याचार होता है। उसकी पत्नी या बेटी धर्म के बहाने अपहृत कर ली जाती है तो मीडिया मूक-बधिर हो जाती है।

वर्ष 2012 में हिन्दू लड़की रिंकल कुमारी का मामला अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गूंजा था लेकिन उसके बाद भी उसका धर्म परिवर्तन कराकर उसे मुसलमान बनाया गया। इसके बाद नावीद शाह नाम के एक मुस्लिम युवक से उसकी शादी करा दी गई थी। उस समय रिंकल के वकील अमरलाल ने पत्रकारों के सामने दुखी मन से कहा था, कि कभी अनिता को बेचा जाता है, कभी जैकबाबाद से कविता को उठाकर ताकत के जोर पर मुसलमान किया जाता है, कभी सपना को उठाते हैं तो कभी पनो आकिल से पिंकी को ले जाते हैं। रिंकल अविवाहित थी लेकिन इसके बाद तो धारकी कस्बे से एक हिन्दू विवाहित महिला का अपहरण करके उसका जबरन धर्म परिवर्तन किया गया। बाद में उसे एक स्थानीय अदालत में पेश कर उससे जबरन बयान दिलवाया गया कि उसने मुस्लिम लड़के से निकाह कर लिया है। बाद में इस हिन्दू महिला ने किसी तरह अपने माता-पिता से सम्पर्क करके बताया कि किस तरह उसका अपहरण किया गया और क्या-क्या जुल्म ढाये गए। इसके बाद जब उसका परिवार व अन्य हिन्दू इस संबंध में आगे आये तो उच्चाधिकारियों ने उसे बुरे परिणाम भुगतने की धमकी दी। यह कोई एक या दो घटना नहीं है बल्कि ऐसी घटनाएँ पाकिस्तान में रह रहे हर तीसरे हिन्दू परिवार के साथ हो रही है। रबीना पाकिस्तान के सकूर में रहती थी और डॉक्टर बनना चाहती थी। इन्टरमीडिएट की परीक्षा में अच्छे अंक लेकर वह शहर के मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के लिए गई। उसे सिर्फ इस वजह से प्रवेश नहीं दिया कि वह हिन्दू है और दाखिले के लिए उसे धर्म परिवर्तन की सलाह दी गयी।

अक्सर हमारे देश से गाजा पट्टी, के लिए प्रदर्शन होते है, इस्लाम पर कोई विवादित टिप्पणी वह चाहे यूरोप के अन्दर हो या अमेरिकी प्रायदीप में उस समय तथाकथित सैकुलर दल और मौलाना भीड़ के साथ सड़कों पर उतरते दिखाई देते है। पर इस तरह के अपराधों पर इनकी मानवीय सवेंदना और धार्मिक चेतना मरी सी नजर आती है। एक गैर सरकारी संस्था 'मूवमेंट फॉर पीस एंड सॉलिडेरिटी इन पाकिस्तान' के अनुसार हर वर्ष करीब 5 सौ से हजार ईसाई और हिंदू लड़कियों का जबरन धर्म परिवर्तन कराया जाता है। इतना ही नहीं उनकी इच्छा के विरुद्ध उनकी शादियां मुसलमानों से कराई जाती है। संस्था बताती है कि 12 से 25 साल उम्र की लड़कियों का पहले अपहरण कर लिया जाता है, फिर उन्हें इस्लाम कबूल करने को कहा जाता है, उसके बाद उसका किसी से निकाह करवा दिया जाता है। इसमें यह भी दिखाया जाता है कि उन्होंने अपनी इच्छा से इस्लाम धर्म कबूल किया है। इसके बाद उनके साथ पाश्विक व्यवहार किया जाता है। बलात्कार होता है और कई बार तो उन्हें वेश्यालय में धकेल दिया जाता है। पाकिस्तान का संविधान कहता है कि अल्पसंख्यकों के अधिकारों की सरकार को हिफाजत करनी पड़ेगी और उन्हें नौकरियाँ देनी होंगी लेकिन हकीकत में ये कागजों पर ही सीमित है। क्योंकि पाकिस्तान के संविधान पर मजहब और मुल्ला हमेशा भारी रहे हैं। इस सब के बावजूद अब सिर्फ आशा ही की जा सकती है कि इस विधेयक के पास हो जाने के बाद पाकिस्तानी प्रशासन और सरकार मानवीय बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए मजहब से ऊपर उठकर इस कानून को वहां सख्ती के लागू करे!

-राजीव चौधरी

ईसाई धर्मान्तरण की समाज सुधारकों द्वारा निंदा

हमारे देश के संभवत: शायद ही कोई चिंतक ऐसे हुए हों जिन्होंने प्रलोभन द्वारा धर्मान्तरण करने की निंदा न की हो। महान चिंतक एवं समाज सुधारक स्वामी दयानंद का एक ईसाई पादरी से शास्त्रार्थ हो रहा था। स्वामी जी ने पादरी से कहा कि हिन्दुओं का धर्मांतरण करने के तीन तरीके हैं। पहला जैसा मुसलमानों के राज में गर्दन पर तलवार रखकर जोर जबरदस्ती से बनाया जाता था। दूसरा बाढ़, भूकम्प, प्लेग आदि प्राकृतिक आपदा जिसमें हजारों लोग निराश्रित होकर ईसाइयों द्वारा संचालित अनाथाश्रम एवं विधवाश्रम आदि में लोभ-प्रलोभन के चलते भर्ती हो जाते थे और इस कारण से आप लोग प्राकृतिक आपदाओं के देश पर बार-बार आने की अपने ईश्वर से प्रार्थना करते हैं और तीसरा बाइबिल की शिक्षाओं के जोर शोर से प्रचार-प्रसार करके। मेरे विचार से इन तीनों में सबसे उचित अंतिम तरीका मानता हूँ। स्वामी दयानंद की स्पष्टवादिता सुनकर पादरी के मुख से कोई शब्द न निकला। स्वामी जी ने कुछ ही पंक्तियों में धर्मान्तरण के पीछे की विकृत मानसिकता को उजागर कर दिया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ईसाई धर्मान्तरण के सबसे बड़े आलोचकों में से एक थे। अपनी आत्मकथा में महात्मा गांधी लिखते हैं 'उन दिनों ईसाई मिशनरी हाई स्कूल के पास नुक्कड़ पर खड़े होकर हिन्दुओं तथा देवी देवताओं पर गालियां उड़ेलते हुए अपने मत का प्रचार करते थे। यह भी सुना है कि एक नया कन्वर्ट (मतांतरित) अपने पूर्वजों के धर्म को, उनके रहन-सहन को तथा उनको गालियां देने लगता है। इन सबसे मुझमें ईसाइयत के प्रति नापसंदगी पैदा हो गई। इतना ही नहीं गांधी जी से मई, 1935 में एक ईसाई मिशनरी नर्स ने पूछा कि क्या आप मिशनरियों के भारत आगमन पर रोक लगाना चाहते हैं? जवाब में गांधी जी ने कहा था, 'अगर सत्ता मेरे हाथ में हो और मैं कानून बना सकूं तो मैं मतांतरण का यह सारा धंधा ही बंद करा दूँ।' मिशनरियों के प्रवेश से उन हिन्दू परिवारों में जहाँ मिशनरी बैठे हैं, वेशभूषा, रीतिरिवाज एवं खानपान तक में अंतर आ गया है।

समाज सुधारक एवं देशभक्त लाला लाजपत राय द्वारा प्राकृतिक आपदाओं में अनाथ बच्चों एवं विधवा स्त्रियों को मिशनरी द्वारा धर्मान्तरित करने का पुरजोर विरोध किया गया जिसके कारण यह मामला अदालत तक पहुंच गया। ईसाई मिशनरी द्वारा किये गए कोर्ट केस में लाला जी की विजय हुई एवं एक आयोग के माध्यम से लाला जी ने यह प्रस्ताव पास करवाया कि जब तक कोई भी स्थानीय संस्था निराश्रितों को आश्रय देने से मना न कर दे तब तक ईसाई मिशनरी उन्हें अपना नहीं सकती।

समाज सुधारक डॉ. अम्बेडकर को ईसाई समाज द्वारा अनेक प्रलोभन ईसाई मत अपनाने के लिए दिए गए मगर यह जमीनी हकीकत से परिचित थे कि ईसाई मत ग्रहण कर लेने से भी दलित समाज अपने मूलभूत अधिकारों से वंचित ही रहेगा। डॉ. अम्बेडकर का चिंतन कितना व्यावहारिक था यह आज देखने को मिलता

- शेष पृष्ठ 8 पर

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा अन्तर्गत एकांकी प्रतियोगिता सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आर्य विद्या परिषद दिल्ली के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल न्यू मोती नगर में अन्तर्विद्यालयी एकांकी प्रतियोगिता 2 अगस्त 2016 को आर्य समाज के प्रधान श्री मदन मोहन सलूजा की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस प्रतियोगिता में विभिन्न आर्य विद्यालयों से लगभग 150 विद्यार्थियों व अध्यापिकाओं ने भाग लिया। तीनों वर्गों में क्रमशः शहीद भगतसिंह, लाला लाजपत राय एवं धर्मवीर हकीकत राय पर विद्यार्थियों ने सुन्दर प्रस्तुतियाँ दी। लाला लाजपतराय एवं शहीद भगत सिंह के एकांकी को देखकर जहाँ दर्शकों के मन में देशभक्ति का जज्बा पैदा होता है वहीं बाल हकीकत राय के बलिदान को देखकर सबकी आंखों में आँसू आ गए।

निर्णायक मण्डल में श्री आनन्द जी, श्रीमती किरण पठानियाँ जी एवं आर्य समाज के मंत्री श्री जुल्फी ने अपना निष्पक्ष निर्णय दिया। सभी प्रतियोगियों को सुन्दर प्रमाण पत्र, नैतिक शिक्षा पर आधारित पुस्तकें 'विद्यार्थियों की दिनचर्या' व 'कुछ करो- कुछ बनो' तथा विजेता टीमों को शील्डें प्रदान की गईं।

इस अवसर पर विद्यालय के प्रधान श्री मदन मोहन सलूजा जी, मैनेजर श्री सुरेश टंडन जी, प्रिंसिपल श्रीमती इन्द्रा छाबड़ा, श्रीमती सुरुचि टंडन, आर्य समाज कीर्ति नगर के प्रधान श्री ओम प्रकाश जी व उनकी धर्मपत्नी, आर्य विद्या परिषद की संयोजिका श्रीमती वीना आर्या एवं श्रीमती तृप्ता शर्मा भी उपस्थित थीं। सभी के जलपान की व्यवस्था विद्यालय की ओर से की गई थी।

– *संचालिका*

एकांकी प्रतियोगिता में पुरस्कृत विद्यालय

वर्ग 1. विषय : शहीद भगत सिंह
प्रथम – महर्षि दयानन्द प. स्कूल, न्यू मोती नगर
द्वितीय – दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर
तृतीय – एस.एम. आर्य प. स्कूल, पंजाबी बाग

वर्ग 2. विषय : लाला लाजपत राय
प्रथम – एस.एम. आर्य प. स्कूल, पंजाबी बाग
द्वितीय – महर्षि दयानन्द प. स्कूल, न्यू मोती नगर
तृतीय – बिरला आर्य क.सी. सै. स्कूल, कमला नगर

वर्ग 3. विषय : वीर हकीकत राय
प्रथम – दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर
द्वितीय – एस.एम. आर्य प. स्कूल, पंजाबी बाग
तृतीय – बिरला आर्य क.सी. सै. स्कूल, कमला नगर

अण्डमान-निकोबार में होगी आर्य समाज की स्थापना – श्री जगदीश मुखी, उपराज्यपाल

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं महाशय धर्मपाल जी ने भेजे बधाई पत्र

नई दिल्ली के जनकपुरी क्षेत्र से 7 बार विधायक रह चुके एवं दिल्ली के पूर्व वित्तमंत्री रहे श्री जगदीश मुखी जी को अण्डमान-निकोबार का उपराज्यपाल नियुक्त किये जाने पर आर्य समाज सी ब्लॉक जनकपुरी द्वारा श्रावणी पर्व पर शाल ओढ़ाकर व ओ३म् का स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री मुखी जी के समक्ष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री शिव कुमार मदान जी ने प्रस्ताव रखा कि अण्डमान-निकोबार में अभी कोई आर्य समाज स्थापित नहीं है। इसके प्रतिउत्तर में श्री मुखी जी ने आश्वासन देते हुए कहा कि 'जैसे ही मुझे अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में आर्य समाज स्थापना का कोई प्रस्ताव प्राप्त होगा, उसे अवश्य ही आगे बढ़ाएंगे।' ज्ञात हो वर्तमान में अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में कोई आर्य समाज स्थापित नहीं है। – *मन्त्री*

अण्डमान निकोबार के महामहिम उपराज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी जी को सम्मानित करते दिल्ली सभा उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान, सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री सोमदत्त महाजन, प्रान्तीय महिला सभा की प्रधाना श्रीमती प्रकाश कथूरिया, श्रीमती कृष्णा आहुजा, श्री अजय तनेजा एवं श्री विजय कुमार गुलाटी।

बोध कथा

आत्मिक संसार की कहानी

हमारे टैगोर जी थे न! महाकवि श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर, जिनका लिखा हुआ 'जन गण गन' हमारे देश का राष्ट्रीय गीत बन गया है और जिन्हें साहित्य के लिए संसार का सबसे बड़ा पुरस्कार 'नोबेल प्राइज़' मिला था, एक बार लाहौर आये तो मैं उन्हें मिला। कितनी सुन्दर, शान्त मूर्ति थी उनकी! बिल्कुल एक ऋषि-से प्रतीत होते थे वे। लाहौर में लाला धनीराम भल्ला के यहाँ वे ठहरे थे। महाकवि ने भल्ला जी की कोठी में उपनिषदों की कथा आरम्भ की। टैगोर जी अंग्रेजी में बोलते थे। पण्डित ऋषिराम जी हिन्दी में उसका अनुवाद करते थे। एक बार पहुँचा तो वे कर्म-सिद्धान्त को समझाने के लिए अपनी एक कविता कह रहे थे। कविता बँगला में थी। इसका अनुवाद वे अंग्रेज़ी में सुना रहे थे। कविता का शीर्षक था-बन्दी। यह बन्दी जेल में पड़ा है, इसके चारों ओर ऊँची-ऊँची दीवारें हैं। हाथों में हथकड़ियाँ, पावों में बेड़ियाँ। दीवार में एक छोटी-सी खिड़की है जिस पर लोहे की मोटी-मोटी सलाखें लगी हैं। कैदी बाहर वालों को देख सकते हैं, अन्दर जाने का मार्ग नहीं। कवि इस बन्दी के पास पहुँचता है। पूछता है-''बन्दी! तुझे किसने कैद किया है? किसने ये दीवारें खड़ी की हैं? किसने ये ज़ंजीरें बनवाई हैं? किसने इन ज़ंजीरों से तुझे जकड़ दिया है?''

और बन्दी सिर झुकाकर कहता है-''मैंने स्वयं ही अपने-आपको कैद किया है। मैंने स्वयं ही इन दीवारों का निर्माण किया है। मैंने स्वयं ही इन ज़ंजीरों को बनाया है। स्वयं ही अपने को इनमें जकड़ लिया है, परन्तु अब स्वयं ही विवश हो गया हूँ।''

यह है आत्मिक संसार की कहानी! यह ठीक है कि तुम विवश हो गए हो, परन्तु किसी दूसरे ने तुम्हें विवश नहीं किया। किसी दूसरे ने तुम्हारे लिए जेल नहीं बनाई। इस जाल ने तुमको नहीं पकड़ रक्खा, तुमने इस जाल को पकड़ रखा है। यह है मोह का जाल जिसमें तुमने स्वयं को जकड़ रक्खा है। इस जाल से बाहर आये बिना मानसिक तप तुमसे होगा नहीं। कल्याण का मार्ग तुम्हें मिलेगा नहीं।

पृष्ठ 4 का शेष

प्रथम पृष्ठ का शेष

चमत्कार नाम के नाम पर संत की उपाधि देना : धर्मान्तरण....

अब पहली बार देश को एक विदेशी संत मिलेगी जो चार सितम्बर को वेटिकन से लांच होगी। प्योर रोमन केथोलिक संत। पर अच्छा होता यह सब भी सरकार के **'मेक इन इंडिया प्रोग्राम'** के तहत होता। या ऐसा हो सकता है वर्तमान सरकार ने धर्म में भी एफ.डी.आई. लागू की हो कि संत भी अब विदेशी होंगे! यदि नहीं तो क्या सरकार यह बता सकती है कि अगर वह भारतीय थी तो उसे ये संत की डिग्री विदेश से क्यों? क्या चमत्कार करने वाले बाबाओं को भी संत की डिग्री देगी सरकार? ये प्रश्न उठने जायज हैं। क्या अब सरकार टेरेसा के चमत्कारों से उत्साहित होकर चमत्कार अस्पताल खोलेगी जिसमें दवा के बजाय चमत्कारों से असाध्य रोगियों का इलाज होगा? हो सकता है केजरीवाल जी भी मोहल्ला क्लीनिक के बजाय चमत्कार क्लीनिक खोल दे या फिर सुषमा स्वराज जी के आदेश पर स्वास्थ्य मंत्रालय में एक विभाग बना दिया जाए 'चमत्कार विभाग'!

21 सदी में भारत जैसे गरीब देश में जहाँ सरकारों की कोशिश होनी चाहिए थी कि व्यापक पैमाने पर शिक्षा घर-घर तक पहुचाई जाये और इन तथाकथित संतों, देवी-देवताओं, पशु बली, टोने-टोटके आदि से लोगों को बाहर निकाला जाये वहां वर्तमान सरकार इसे और अधिक बढ़ावा देने का कार्य सा करती नजर आ रही है। पिछले कुछ वर्षों में अंधविश्वास पर बारीकी से अध्ययन करने के बाद एक बात सामने आई है कि कोई भी मजहब या सम्प्रदाय हो इस प्रकार की हरकते होती रही हैं और आगे भी होती रहेंगी जब तक कि आम जनता अपने कर्मों पर विश्वास करने की बजाय बाबाओं, संतों माताओं, देवियों आदि के चक्कर में पड़ी रहेगी।

हो सकता है मदर टेरेसा की सेवा अच्छी रही हो, परन्तु इसमें एक उद्देश्य हुआ करता था - "जिसकी सेवा की जा रही है उसका इसाई धर्म में धर्मांतरण भी किया जाये।" पर मदर टेरेसा सिर्फ और सिर्फ इसाई कैथोलिक प्रचारक ही थीं। मदर टेरेसा की संस्था के अनाथालयों में अनाथ बच्चों को रोमन कैथोलिक चर्च के रीति-रिवाजों और विधि-विधान के मुताबिक पाला पोसा जाता रहा है। यदि वहां से कोई बच्चा गोद लेना चाहे तो वह सिर्फ कैथोलिक इसाई बनने के बाद ही दिया जाता है। एक बार एक प्रोटेस्टेंट इसाई परिवार बच्चा गोद लेने गया तो उसे यह कहकर मना कर दिया कि "आपके साथ बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास पर बहुत बुरा प्रभाव होगा। अगर बच्चों को रोमन परम्परा से अलग हटाया गया तो उनके विकास की गति छिन्न-भिन्न हो जायेगी। हम उन्हें आपको गोद नहीं दे सकते, क्योंकि आप प्रोटेस्टेंट हैं।" उसी दौरान भारतीय संसद में धर्म की स्वतंत्रता के पर एक बिल प्रस्तुत किया जाना था। जिसका उद्देश्य था कि किसी को भी अन्यों का धर्म बदलने की अनुमति नहीं होनी चाहिए। जब तक कि कोई अपनी मर्जी से अपना धर्म छोड़कर किसी अन्य धर्म को अपनाना न चाहे। मदर टेरेसा पहली थीं जिन्होने इस बिल का विरोध किया। उन्होंने तत्कालीन सरकार को पत्र लिखा - "यह बिल किसी भी हालत में पास नहीं होना चाहिए क्योंकि यह पूरी तरह से हमारे काम के खिलाफ जाता है। हम लोगों को बचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और लोग केवल तभी बचाए जा सकते हैं जब वे रोमन कैथोलिक ईसाई बन जाएँ।"

एक बड़ा प्रश्न लोग यह भी करते है कि यदि हम अपने लोगों की सेवा करते तो बाहरी लोगों को यहाँ आने की जरूरत नहीं पड़ती। यह बात बिलकुल सत्य के करीब है क्योंकि गरीब आदमी के पेट और अशिक्षा पर धर्म बड़ा जल्दी खड़ा होता है।

उड़ीसा के दाना मांझी वाले मामले में ही देख लीजिये कि बहरीन के सुल्तान ने उसे पैसे देने की पेशकश तक कर डाली वरना लोग तो सीरिया में भी रोजाना मर रहे हैं, जो मुसलमान भी हैं। उनके प्रति उसके मन में कोई संवेदना क्यों नही जगी? पर नहीं क्योंकि दाना मांझी एक हिन्दू आदिवासी है और इनकी गरीबी पर इस्लाम थौपा जा सकता है। जिस तरह मदर टेरेसा की नजर में उसके लिए गरीब आदमी सबसे बड़ा वरदान था। मदर टेरेसा ऐसा क्यों चाहती थी। इसका जवाब 1989 में मदर टेरेसा ने खुद टाइम मैगजीन को दिए एक इंटरव्यू में दिया था।

प्रश्न- भगवान् ने आपको सबसे बड़ा तोहफा क्या दिया है?

मदर टेरेसा- गरीब लोग।

प्रश्न- भारत में आपकी सबसे बड़ी उम्मीद क्या है?

मदर टेरेसा-जीसस को सब तक पहुंचाना।

यह सब सुनकर पढ़कर क्या कोई उसे संत या कोई धार्मिक मानेगा? शायद नहीं! मेरे लिए मदर टेरेसा और उनके जैसे लोग पाखंडी हैं, क्योंकि वे कहते एक बात हैं, और करते दूसरी बात हैं। पर यह सिर्फ बाहरी मुखौटा होता है क्योंकि यह पूरा राजनीति का खेल है। आज वर्तमान सरकार भी पूर्वोत्तर राज्यों में अपनी पैठ बनाने के लिए इस पाखंड के खेल का हिस्सा बनने जा रही है। संख्याबल की राजनीति। टेरेसा की मौत के बाद पॉप जॉन पॉल को उन्हें संत घोषित करने की बेहद जल्दबाजी हो गयी थी। हो सकता है इसका मुख्य कारण भारत में बड़े पैमाने पर धर्मांतरण किया जाना रहा हो? बहरहाल इस मामले पर प्रश्न इतना है कि यह इसाई समुदाय का अपना व्यक्तिगत मामला न होकर धार्मिक व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न बन जाता है कि क्या दो संयोग हो जाने पर किसी को संत घोषित किया जा सकता है? मनुष्य ईश्वर की बनाई व्यवस्था को संचालित कर उसके वजूद को टक्कर दे सकता है? यदि मदर टेरेसा को याद करने से दो रोगी ठीक हो सकते है तो समूचे विश्व में अस्पतालों की जरूरत क्या है? हर जगह टेरेसा का फोटो टांग दो मरीज ठीक हो जाया करेंगे। या फिर भारत में और अधिक अंधविश्वास को बढ़ावा देने की योजना है? वैसे देखा जाये तो पिछले कुछ सालों में भारत के अन्दर भी कोई दो-ढाई करोड़ लोग संत शब्द का इस्तेमाल करने लगे है। पर सही मायने में यह संत शब्द का अपमान है।

सरकार को इस तरह के आयोजन में शरीक होने से बचना चाहिए।

मैं आर्यसमाजी कैसे बना? — **आचार्य स्व. लाखन प्रसाद आर्य के समक्ष की आर्य बनने की प्रतिज्ञा** — **- सन्त शरण आर्य**

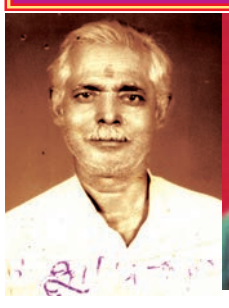

मैं अपने बचपन से पिताजी की कर्मकांडीयरूप से प्रभावित था। मेरी भांजी की शादी के अवसर पर ग्राम गुनावां (नवादा) सत्य नारायण कथा का आयोजन किया जा रहा था। मेरी आयु उस समय 12 वर्ष की थी। हमारे जीजा के ममेरे भाई श्री सत्यनारायण आर्य आये हुए थे। कथा के प्रारंभ में पंच देवता, नवग्रह और गणेश का आवाहन पंडित जी कर रहे थे। श्री सत्य नारायण आर्य ने पंडित जी से प्रश्न किया कि आपने (5+9+1=15) देवता का आह्वान कर लिया। हमें एक से बात करा दीजिए। पंडित जी ने कहा- बबुआ यह भावना से किया गया है। सत्य नारायण जी ने एक मिट्टी का ढेला पण्डित जी के हाथ में देकर कहा कि भावना से इसे मिश्री मानकर खा जाइये। पण्डित जी ने कहा यह तो मिट्टी का ढेला है मिश्री कैसे मान लूँ। 1 घंटा तक दोनों में तर्क चलता रहा, अन्त में पण्डित जी ने कहा- मैं जो अब तक बचपन से सीखकर कर रहा हूँ तथा जो पुस्तक में कथा वर्णित है वही मैं कहता हूँ। क्या सत्य और असत्य हैं मैं नहीं कह सकता। इतना कहकर पंडित जी ने हार स्वीकार कर ली। मैं इस प्रसंग को देखकर और सुनकर बहुत विस्मित हुआ। मेरे मन में अनेकों वाद विवाद होने लगे। श्री सत्य नारायण आर्य, आर्य समाज, मठगुलनी के पुरोहित थे और हैं। 3 वर्ष बाद मानपुर में मेरे जीजा जी की माँ का देहान्त हो गया। वे पक्के आर्य समाजी थे। मैंने आपने पिताजी को इस निमंत्रण में जाने के लिए बाध्य कर दिया कि कार्ड में ब्रह्मभोज की जगह प्रीतिभोज लिखा है, ऐसा क्यों? यह जानने के लिए मुझे जाने दीजिए। पिताजी की स्वीकृति के बाद मैं वहाँ चला गया था। वहां आचार्य स्व. श्री लाखन प्रसाद आर्य के पौरोहित्य में यज्ञ प्रारम्भ हो चुका था। हवन के बाद पुरोहित जी से मैंने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। पुरोहित जी ने सारे प्रश्नों का यथोचित उत्तर देकर मुझे आर्य समाजी बनने पर विवश कर दिया और मैंने उन्हीं के सामने प्रतिज्ञा की मैं भी आर्य समाजी बनूँगा। उनकी प्रेरणा से आर्य समाज नेमदारगंज में प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक में जाना शुरू कर दिया। वहाँ के प्रधान स्व. मथुरा लाल आर्य थे, उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के लिए प्रेरित किया। मैं सत्यार्थ प्रकाश लाकर प्रतिदिन नियमित रूप से सपरिवार मिलकर पढ़ना और सुनना शुरू किया।

इस घटना के 5 वर्ष बाद मेरे चाचा जी का देहान्त हुआ था। मैंने साहस समेटकर वैदिक कर्मकाण्ड करने का संकल्प ले लिया। ब्राह्मण जाति के लोगों ने कड़ा विरोध किया। समूचे गाँव में प्रचार किया कि यह हिन्दू नहीं मुसलमान हो गया। धर्म के विरूद्ध कार्य कर रहा है। मैं ईश्वर पर विश्वास करके बरबिघा आर्य समाज से विद्वानों को बुलवाया, जो वार्षिक उत्सव पर आये हुए थे। वे लोग (1 जोरावर सिंह, 2 प्रभावती देवी, 3 महावीर प्र. तार्किक, 4 शिवधर आर्य) सूचना पाते ही आ गये। मैंने पण्डाल बनवाया तथा आर्य समाज नेमदार गंज के सदस्यों ने सहयोग किया। 10वें, 11वें, 12वें दिन बड़े धूम-धाम से प्रचार हुआ। गाँव के सभी लोग उनके प्रवचन सुनकर प्रभावित हुए। श्राद्ध पर सही विचारों का प्रसार हुआ। सभी जाति के लोगों ने भोज में शामिल होकर मेरा उत्साहवर्धन किया। प्रात: विद्वानों ने मंच से यह व्याख्यान दिया कि पूरा गाँव ब्राह्मण और तिवारी को छोड़कर सभी एक है। ब्राह्मण तिवारी आप लोग हिन्दू से अलग हैं क्योंकि आप भोज में सम्मिलित नहीं हुए।

इस घटना के बाद मेरे मन में फिर एक बात कौंध गई कि मेरी माँ प्रत्येक पर्व में घी और सिंदूर से मिट्टी की दीवार पर देवता के नाम पर लीपती थी। पहले मैंने अपनी पत्नी को दृढ़ बनाया तथा माँ पिताजी को इसकी सच्चाई समझाते हुए वेद की उक्ति (मातृमान, पितृमान, आचार्यवान पुरुषो वेद) की सार्थकता को समझाया तथा दीवार से सारे देवताओं को हटाकर घर में यज्ञ करना शुरू किया।

आज अपने बेटे, बेटियों को प्रभावित देखकर मैं ईश्वर को कोटिश: धन्यवाद देता हूँ कि आपने एक छोटी सी चिंगारी पैदाकर मुझे सत्य मार्ग पर जीना सिखाया। मुझे ऋषि दयानंद का एक सिपाही बनाया।

आज मेरी आयु 71 वर्ष पूरी हो गई है। कल मैं रहूँगा या नहीं; परन्तु आज पूर्ण संतुष्ट हूँ, आगे इश्वर की इच्छा।

मेरी पत्नी श्रीमती उर्मिला देवी की सूझबूझ और दृढ़ता ने मेरा उत्साहवर्धन किया। आज उनके सहयोग के कारण ही मेरा पूरा परिवार आर्य कहलाने का साहस कर रहा है।

- मंत्री आर्यसमाज नेमदारगंज
नवादा (बिहार)-805121

आपके साथ ऐसा क्या हुआ कि आप आर्यसमाज की ओर आकर्षित हुए। यदि आपने भी किसी की प्रेरणा/विचारों से प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रवेश करके वैदिक संस्कृति को अपनाया है तो यह कॉलम आपके लिए ही है। आप अपनी घटना/ प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखकर भेजिए। आपके विवरण को युवाओं की प्रेरणा एवं जानकारी के लिए आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा। हमारा पता है-

'सम्पादक' - साप्ताहिक आर्य सन्देश,
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 email : aryasabha@yahoo.com

Continue from last issue :-

Glimpses of the SamaVeda

- Priyavrata Das

The Hidden Fire

'The omnipresent fire lies hidden between the two wooden sticks ready to be rubbed. When kindled, this cryptic fire appears as an embryo lovingly cared for in the body of a pregnant woman. The fire divine must be praised highly and exalted by the ever-vigilant men'.

No fire is produced without efforts. The divine fire in form of the will to uplift the souls causes the Creation. The celestial fire manufactures the heavenly bodies. The earthly fire living in the minds inspires the beings to act. Offsprings are the product of a couple to raise an embryo in a woman. Fire is the reason of any form or shape. It is, therefore, regarded as most adorable in the Vedic texts. The Creator and the primordial matter, the preceptor and the disciple, the husband and the wife, the heaven and the earth are all producers in various spheres. Another verse in the hymns says, 'Born out of eternal law and satiated with oblation, O fire within, you have been kindled for the sake of enriching wisdom. May we proclaim the glory of the mystic fire that is sovereign. May its gracious favour largely grow and multiply for ever'.

अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भ इवेत् सुभृतो गर्भिणीभिः।
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः।।(Sv.79)

Aranyor nihito jataveda garbha ivet subhrto garbhinibhih.
divediva idyo jagrvadbhir havismadbhir manusyebhir agnih..

Lessons from the Elders

"May our elders, the divine self- luminaries and offsprings of Mother Infinity, eradicate diseases from us and drive away our crookedness. May they ever keep us away from sin".

Describing the psychological aspect of education, the verse maintains that man becomes literate by reading books, and he becomes wise by witnessing the lives of the experienced elders. The purpose of education is the physical, mental and intellectual development of boys and girls. Father and mother give birth to children and their home is the first school for learning. The mother teaches them the mother-tongue as well as good manners. They observe the example of strength and valour from father. Getting older, they go to the teachers and learn several lessons of creation. In course of time, they acquire the knowledge from the spiritual teachers and the aged teachers. The verse calls them 'Adityas', who create the uninterrupted tradition of living in society. They inculcate fine qualities in the common people and set forth the guide lines for physical, mental and intellectual prowess.

The body becomes strong by paying due attention to balanced food, regular exercise and observance of celibacy. The mind becomes steady and clean by following the truth in thought and action.Conscientious thinking makes the intellect pure and clean. The elders who impart these three types of lessons are known as 'Aditya'.

अपामीवामप स्रिधमप सेधत दुर्मतिम्।
आदित्यासो युयोतना नो अंहसः।। (Sv.397)

Apamivamapa sridhamapa sedhata durmatim.
adityaso yuyotana no amhasah..

Soul, the Impeller

A dead body's face looks distorted. As time passes, the body starts decomposing. The person who touches the body takes a bath for mental purification. Though there are eyes, the body cannot see. In spite of having ears, the body cannot hear. Even if the mouth is there, it cannot eat. With the departure of the soul, the body becomes impure, ugly and motionless.

The soul is the nectar contained in the earthen vessel of the body. It is the spark of fire of the earthen lamp, the living flame. The corpse is lifeless. The soul is its life-force, thought-force and work-force. Its arrival is the birth of the body and departure its death. The inspiring power of the soul awakens the body as a result of which the body becomes mobile. With the soul present, all signs of life are exhibited and felt in its body. Without the soul, all activities get lost. The soul causes different states of the body like awakening, sleeping and deep slumber. Birth, childhood, youth, old age and finally death of the body, all these have only one impeller, the soul.

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे।
समुषद्भिरजायथाः।। (Sv.1470)

Ketum krnvann aketave peso marya apesase.
samusadbhir ajayathah..

To be Conti....

आओ संस्कृत सीखें

गतांक से आगे....

संस्कृत पाठ – 11

विद्यालय संवाद

रमेश :– सुप्रभातम् प्रभा! कथं अस्ति भवती? संस्कृतस्य गृहकार्य तं किल ?

प्रभा – सुप्रभातं रमेशः! अहम् कुशली अस्मि। अहो संस्कृतस्य गृहकार्य तु मया ना तं यतोहि गृहे मम भ्रातुः जन्मदिवसस्य लघु कार्यक्रमः आसीत्। परं आचार्यः निश्चयेन क्रोधं करिष्यसि।

रमेशः– प्रभा चिन्ता मास्तु। संस्कृतस्य गृहकार्ये अहं भवत्याः सहायतां करिष्यामि। चलतु इदानीं कक्षायां गच्छावः।

प्रभा – धन्यवाद रमेशः। अरे पश्यतु ततः सुयशः आगच्छति। चलतु तस्य पार्शवे गच्छावः।

रमेशः – आम् चलतु।

सुयशः सुप्रभातं मित्रे। संस्कृत दिवसस्य शुभाशयः।

रमेशः संस्कृत दिवसः? अद्य संस्कृत दिवसः अस्ति किम्?

प्रभा – अहो! अद्य श्रावण मासस्य पूर्णिमा अस्ति। श्रावण मासस्य पूर्णिमायाम् एव संस्कृत दिवसः भवति। संस्कृत दिवसस्य शुभाशयः सुयशः। धन्यवादः अस्य स्मारणाय।

सुयशः चलतु कक्षायां गत्वा अस्याः सुचना सर्वान् यच्छामः।

सर्वे अस्तु चलामः।

सर्वे – सर्वेभ्यो नमो नमः। सुप्रभातम्।

रमेशः – सर्वेभ्यो संस्कृत दिवसस्य शुभाशयः।

लतिका – ह्यः एव मम माता अस्य सूचना मां दत्तवति। सा उक्तवति यत् श्रावण मासस्य पूर्णिमायाम् भारते संस्कृत दिवस्य आयोजनं भवति।

क्रमशः

– आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

ईश्वर का अनमोल उपहार हैं पेड़–पौधे

आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा दिनांक 18 अगस्त 2016 को आयोजित विज्ञान नगर व न्यू किड्स वर्ल्ड स्कूल में आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में पधारे डॉ. विनय विद्यालंकार ने कहा 'पेड़–पौधे ईश्वर का अनमोल उपहार हैं, इनसे न केवल फल–फूल, औषधि, छाया, लकड़ी, वायु मिलती है। साथ ही पर्यावरण का संरक्षण कर वर्षा, नदी, पहाड़ समुद्र का संरक्षण भी करते हैं।' इस अवसर पर सभा प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने आंवला, बिल्व, तुलसी, अशोक, रुद्राक्ष, गुग्गल के पौधों का रोपण किया। *– अरविन्द पाण्डेय, प्रचारमंत्री*

अशोक विहार फेज–1 में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं श्रावणी पर्व

आर्य समाज मन्दिर अशोक विहार फेज–1 के तत्त्वावधान में दिनांक 25 से 28 अगस्त 2016 के मध्य श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं श्रावणी पर्व आयोजित किया जा रहा है जिसके अन्तर्गत सामवेदीय यज्ञ, संगीतमय गीता ज्ञान यज्ञ, प्रवचन एवं मधुर भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा। *– मन्त्री*

70वें स्वतन्त्रता दिवस पर आर्य वीर दल नजफगढ़ द्वारा कुश्ती का विशाल दंगल

आजादी के 70वें स्वतन्त्रता दिवस पर देव भूमि गांव–सैमाण, जिला रोहतक में आर्य चित्रकार एवं आर्यवीर दल, नजफगढ, दिल्ली के आर्यवीरों द्वारा दिनांक 15 अगस्त 2016 को कुश्ती का विशाल दंगल आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ गांव के सबसे बुर्जुग पं. फतूराम जी (95वर्षीय) राष्ट्रीयध्वज फहरा कर किया गया। कार्यक्रम में गांव के 11 प्रतिष्ठित, प्रतिभावान् व्यक्तियों का सम्मान किया गया और सर्वश्रेष्ठ समाज सेवी व महम चौबीसी पंचायत के प्रधान श्री हरिओम सिवाच ने शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए क्रांतिकारियों के आदर्शो पर चलने की प्रेरणा दी व आजादी के प्रथम उद्घोषक महर्षि दयानन्द जी के योगदान पर प्रकाश डाला। दंगल में शामिल छोटे–बड़े पहलवानों को पुरस्कृत किया गया। *– मन्त्री*

श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज हौज खास बी–6 में दिनांक 22 से 27 अगस्त 2016 के मध्य प्रतिदिन सायं 6 से 7.30 बजे श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। डॉ. हरी देव शास्त्री द्वारा वेद कथा प्रस्तुत की जाएगी। **– श्री कृष्ण कुमार, मन्त्री**

प्रेरक प्रसंग

आर्यसमाजी बन गया तो ठीक किया

1903 ई. में गुजराँवाला में एक चतुर मुसलमान शुद्ध होकर धर्मपाल बना। इसने गिरगिट की तरह कई रंग बदले। इस शुद्धि समारोह में कॉलेज के कई छात्र सम्मिलित हुए। ऐसे एक युवक को उसके पिता ने कहा, हरिद्वार जाकर प्रायश्चित्त करो, नहीं तो हम पढ़ाई का व्यय न देंगे। प्रसिद्ध आर्य मास्टर ला. गंगाराम जी को इसका पता लगा। आपने उस युवक को बुलाकर कहा तुम पढ़ते रहो, मैं सारा खर्चा दूँगा। इस प्रकार कई मास व्यतीत हो गये तो लड़के के पिता वजीराबाद में लाला गंगाराम जी से मिले और कहा, 'आप हमारे लड़के को कहें कि वह घर चले, वह आर्य समाजी बन गया है तो अच्छा ही किया। हमें पता लग गया कि आर्य समाजी अच्छे होते हैं।' ऐसा था आर्यो का आचरण।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली का
श्रावणी एवं वेद प्रचार समारोह सम्पन्न

आर्य समाज 15 हनुमान रोड नई दिल्ली में श्रावणीपर्व (रक्षा बन्धन दिनांक 18 अगस्त 2016 को सोल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के सदस्य एवं रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल की अध्यापिकाओं को डा. कर्णदेव शास्त्री द्वारा यज्ञोपवीत दिया गया तथा श्रावणी पर्व एवं यज्ञोपवीत के महत्त्व को बताते हुए यज्ञ सम्पन्न कराया गया।

दिनांक 2 अगस्त से 25 अगस्त तक वेद प्रचार समारोह एवं श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर जहां स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक ने न्याय दर्शन न्याय दर्शन के प्रथम अध्याय के द्वारा मोक्ष प्राप्ति हेतु एवं आत्मिक उन्नति के लिए पाठ पढाया वहां श्रीमती गरिमा शास्त्री जी के सुमधुर भजन भी हुए।

समापन समारोह के अवसर पर योगीराज श्री कृष्ण के सम्बन्ध में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसका विषय था- आदर्श महापुरुष योगीराज श्रीकृष्ण। प्रतियोगिता में प्रथम कु. कन्या-रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल द्वितीय - अब्दुल - सूरजमान डी. ए. वी स्कूल तथा तृतीय स्थान कुं. मानसी - चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर ने प्राप्त किया।

इस अवसर श्री अशोक उकरानी जी का अभिनन्दन भी किया गया समाज के मंत्री श्री दयानन्द यादव जी ने मंच संचालन किया। - ***कर्नल आर.के. वर्मा, प्रधान***

मनु संस्कृति संस्थान द्वारा
आर्यन महिला अभिनन्दन समारोह

18 सितम्बर, 2016 (रविवार)

समय : प्रात: 10 से 1 बजे तक

स्थान : सी-606, आर्यसमाज डिफेंस कालोनी, नई दिल्ली-110024

अध्यक्षता : डॉ. श्रीमती अमिता चौहान

इस अवसर पर उन सभी महिलाओं का सम्मान किया जाएगा जो किसी भी रूप में आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ा रही हैं। - ***ठा. विक्रम सिंह ट्रस्ट***

उत्कल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा उड़ीसा के तत्त्वावधान में उत्कल प्रान्तीय आर्य महा सम्मेलन का भव्य आयोजन आकर्षक, एवं प्रेरक कार्यक्रमों के साथ 23, 24, 25 दिसम्बर 2016 तक किया जाऐगा।

- ***स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, प्रधान***

आर्यसमाज राजनगर-2, पालम कालोनी में
श्रावणी एवं वेद प्रचार

आर्यसमाज राज नगर पालम कालोनी नई दिल्ली का श्रावणी एवं वेद प्रचार समारोह 16-17-18 सितम्बर, 2016 को आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर आचार्य वेद मित्र जी के प्रवचन तथा पं. रामनिवास आर्य के भजनोपदेश होंगे।

-कर्मवीर सिंह आर्य, प्रधान

पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ के तत्त्वावधान में आर्यसमाज हंसापुरी एवं आर्यसमाज दयानन्द भवन नागपुर द्वारा आयोजित शिविर में 5 अध्यापकों, 2 वकीलों सहित 21 पुरोहितों ने प्रशिक्षण का लाभ उठाया।

सस्वर मन्त्रोच्चारण, यज्ञ, योग, सोलह संस्कारों को सम्पन्न कराने की विधि प्रत्यक्षीकरण द्वारा अवगत कराई गई। प्रशिक्षण का कार्य पं. सत्यवीर शास्त्री एवं पं. कृष्णकुमार शास्त्री ने किया। सर्वश्री अशोक यादव, अनिल शर्मा, सन्तोष गुप्ता, रंगलाल प्रजापति का कार्यक्रम में विशेष सहयोग रहा। - ***पं.सत्यवीर शास्त्री***

आर्य समाज टाण्डा अम्बेडकर नगर का
125वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज टाण्डा का शताब्दोत्तर रजत जयन्ती समारोह 10 से 14 नवम्बर 2016 तक मनाया जा रहा है। समारोह के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती तथा स्वागताध्यक्ष श्री दीनदयाल गुप्त जी होंगे। इस अवसर पर सामवेद का बंग भाषानुवाद, स्मारिका, ऋषिकृत लघु ग्रन्थों का प्रकाशन तथा लोकार्पण भी किया जायेगा। - ***रविचन्द्र आर्य, मन्त्री***

आर्य समाज मगरा-पूँजला का
वेद प्रचार समारोह सम्पन्न

आर्य समाज मगरा-पूँजला जोधपुर, द्वारा 3 अगस्त 2016 से 5 अगस्त 2016 तक अनेक स्थानीय विद्यालयों में वेद प्रचार कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर विमल शास्त्री द्वारा वेद ज्ञान, संस्कृति तथा संस्कार हेतु दिए गए प्रवचनों से 5000 (पाँच हजार) विद्यार्थियों ने लाभ प्राप्त किया। - ***जय सिंह भाटी, मन्त्री***

श्रावणी उपाकर्म एवं जन्माष्टमी

आर्य समाज सैक्टर 9, पंचकूला के तत्त्वावधान में श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के उलक्ष्य में दिनांक 22 से 24 अगस्त 2016 के मध्य प्रात: 6.45 से 8 बजे सामवेद यज्ञ आचार्य हरि प्रकाश जी एवं योगीराज श्रीकृष्ण का गुणगान पं. सतीश 'सुमन' एवं पं. सुभाष 'राही' किया गया।

-कमला भाटीवाल, मंत्री

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज हौजखास, नई दिल्ली-16

प्रधान :श्रीमती सुमेधा विद्यालंकार
मंत्री :श्री विद्या भूषण गुप्ता
कोषाध्यक्ष :श्री आनन्द प्रकाश गुप्ता

आर्य समाज पूर्वी बाबरपुर दिल्ली

प्रधान :श्री ऋषिपाल खोखर
मंत्री :श्री रघुबीर सिंह
कोषाध्यक्ष :श्री सोहनलाल

आर्य समाज मस्जिद मोठ, नई दिल्ली-49

प्रधान :श्री चतरसिंह नागर
मंत्री :श्री ओम प्रकाश सैनी
कोषाध्यक्ष :श्री देवेन्द्र कुमार

वीरों की याद में राष्ट्ररक्षा महायज्ञ

अध्यात्म पथ मासिक पत्रिका द्वारा वीरों की याद में दिनांक 13 अगस्त 2016 को राष्ट्ररक्षा महायज्ञ, भजन संध्या, विराट कवि एवं योग सम्मेलन तथा सम्मान समारोह का आयोजन आर्य समाज पश्चिम विहार, नई दिल्ली के सभागार में आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि उत्तरी दिल्ली नगर निगम के महापौर डॉ. संजीव नैय्यर थे। कार्यक्रम का संचालन आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने किया व अध्यक्षता समाजसेवी श्री अरुण सहारन ने की। डॉ. संजीव नैय्यर ने देशभक्ति की कविता का पाठ करते हुए स्वर्णिम नियमों की व्याख्या की। शिक्षा समिति के चेयरमैन श्री यशपाल आर्य ने मातृभूमि की रक्षार्थ शहीद होने वाले वीरों की गाथा सुनाकर राष्ट्रभक्त बनने की प्रेरणा दी।

- ***सूर्य कान्त मिश्र***

वृहद् वृष्टि यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर,महर्षि पाणिनि नगर पूजला जोधपुर के तत्वावधान में 24 जुलाई से 2 अगस्त, 2016 के मध्य 10 दिवसीय वृष्टि यज्ञ व वार्षिकोत्सव मनाया गया। पं. भवदेव शास्त्री द्वारा योग व प्राणायाम करवाया गया। कार्यक्रम 4 सत्र में आयोजित था। कार्यक्रम में बिहार से पधारी ऋचा योगमयी द्वारा देश भक्ति गीत, वर्तमान में आर्य समाज की भूमिका व ईश्वर के गीतों से सभी को मत्र मुग्ध कर दिया। आचार्य कपिल जी द्वारा आर्य समाज की मान्यताऐं क्या हैं उस पर अपने उद्बोधन द्वारा सभी को सरल भाषा में समझाया। वृहद् वृष्टि यज्ञ हरियाली अमावस्या की पूर्णाहुति के शुभ अवसर पर पं. भवदेव जी शास्त्री, आचार्य कपिल जी एवं ऋचा योगमयी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। शास्त्री जी ने कहा की प्रत्येक व्यक्ति को पंचयज्ञ करना चाहिए। महर्षि दयानन्द जी ने इस पर पूरा जोर दिया। - **करण सिंह भाटी, संयोजक**

डी.ए.वी. कोटा (राजस्थान) का
वेद प्रचार सप्ताह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कोटा के तत्त्वावधान में दिनांक 17 अगस्त 2016 को वेद प्रचार सप्ताह का शुभारम्भ हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ देव यज्ञ से श्री शोभाराम आर्य के ब्रह्मत्व में हुआ। मुख्य वक्ता कुमाऊ विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर डॉ. विनय विद्यालंकार जी थे। वेद प्रचार सप्ताह के उद्देश्यों को विद्यालय के धर्म शिक्षक श्री शोभाराम आर्य ने स्पष्ट किया। स्वागत उद्बोधन में श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने कहा कि इस आयोजन की पृष्ठ भूमि में डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान डॉ. पूनम सूरी की विस्तृत सोच है। इस अवसर पर विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों से भाग लिया। - ***प्रबन्धक***

श्रावणी पर्व पर विशेष कार्यक्रम

आर्य वीर दल सोनीपत के तत्त्वावधान में स्थानीय आर्य समाज सैक्टर-14 में श्रावणी पर्व का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। आचार्य सन्दीप जी, दर्शनाचार्य के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ का अनुष्ठान किया गया और यज्ञोपवीत संस्कार का महत्व बताया।

इस अवसर पर 'आर्योदय' संस्था द्वारा 01 अगस्त को आयोजित सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा प्रतियोगिता के विजेता छात्र। छात्राओं को पुस्कार वितरण का कार्यक्रम भी मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहा। - ***सुदर्शन आर्य, मन्त्री***

शराब बन्दी अभियान के तहत रथ यात्रा

आर्य समाज प्रतिनिधि सभा उ.प्र. लखनऊ के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी के नेतृत्व में उ.प्र. में शराब बन्दी अभियान रथ यात्रा गाजियाबाद से दर्जनों वाहनों के साथ मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, डॉ. धीरज वरिष्ठ उपप्रधान के साथ गुरुकुल पूठ के ब्रह्मचारियों के साथ प्रदीप शास्त्री, आचार्य दिनेश, पुष्पेन्द्र शास्त्री जी के सहयोग से पिलखुआ, हापुड़, गढ़मुक्तेश्वर, ब्रजघाट, जोया, अमरोहा, मुरादाबाद, रामपुर, मिलक होते हुए अपराह्न 5 बजे आर्य समाज मॉडल टाउन बरेली पहुंची। समाज के सभागार में शराब बन्दी जनजागरण अभियान रथ यात्रा संगोष्ठी में प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने शराब से समाज, परिवार व राष्ट्र को कितनी हानि हो रही है उसका विस्तार से उद्बोधन करते हुए कहा 'गुजरात शराब बन्दी के कारण उन्नति के शिखर पर है। बिहार सरकार ने राजस्व की चिन्ता किये बगैर पूर्ण शराब बन्दी की है। उसी प्रकार अखिलेश सरकार शीघ्र शराब बन्दी का निर्णय लेकर नितान्त निर्धन गरीब मजदूर व निचले तत्त्वों के कल्याण हेतु पूर्णत: शराब बन्दी करें।' समाज के इस कार्य में आर्य समाज नगरिया परिक्षित एवं ग्रामीण अंचल के दर्जनों आर्य समाजों के पदाधिकारी शामिल हुए। - ***डॉ. श्वेतकेतु शर्मा***

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास

'मोपला'

अवश्य पढ़ें।

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 01/02 सितम्बर, 2016
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 31 अगस्त, 2016

पृष्ठ 3 का शेष

ईसाई धर्मान्तरण की समाज .....

है। जनवरी 1988 में अपनी वार्षिक बैठक में तमिलनाडु के बिशपों ने इस बात पर ध्यान दिया कि धर्मान्तरण के बाद भी अनुसूचित जाति के ईसाई परंपरागत अछूत प्रथा से उत्पन्न सामाजिक व शैक्षिक और आर्थिक अति पिछड़ेपन का शिकार बने हुए हैं। फरवरी 1988 में जारी एक भावपूर्ण पत्र में तमिलनाडु के कैथलिक बिशपों ने स्वीकार किया कि जातिगत विभेद और उनके परिणाम स्वरूप होने वाला अन्याय और हिंसा ईसाई सामाजिक जीवन और व्यवहार में अब भी जारी है। हम इस स्थिति को जानते हैं और गहरी पीड़ा के साथ इसे स्वीकार करते हैं। भारतीय चर्च अब यह स्वीकार करता है कि एक करोड़ 90 लाख भारतीय ईसाइयों का लगभग 60 प्रतिशत भाग भेदभावपूर्ण व्यवहार का शिकार है। उसके साथ दूसरे दर्जे के ईसाई जैसा अथवा उससे भी बुरा व्यवहार किया जाता है। दक्षिण में अनुसूचित जातियों से ईसाई बनने वालों को अपनी बस्तियों तथा गिरिजाघर दोनों जगह अलग रखा जाता है। उनकी 'चेरी' या बस्ती मुख्य बस्ती से कुछ दूरी पर होती है और दूसरों को उपलब्ध नागरिक सुविधाओं से वंचित रखी जाती है। चर्च में उन्हें दाहिनी ओर अलग कर दिया जाता है। उपासना (सर्विस) के समय उन्हें पवित्र पाठ पढने की अथवा पादरी की सहायता करने की अनुमति नहीं होती। बपतिस्मा, दृढ़िकरण अथवा विवाह संस्कार के समय उनकी बारी सबसे बाद में आती है। नीची जातियों से ईसाई बनने वालों के विवाह और अंतिम संस्कार के जुलूस मुख्य बस्ती के मार्गों से नहीं गुजर सकते। अनुसूचित जातियों से ईसाई बनने वालों के कब्रिस्तान अलग हैं। उनके मृतकों के लिए गिरजाघर की घंटियां नहीं बजतीं, न ही अंतिम प्रार्थना के लिए पादरी मृतक के घर जाता है।

अंतिम संस्कार के लिए शव को गिरजाघर के भीतर नहीं ले जाया जा सकता। स्पष्ट है कि 'उच्च जाति' और निम्न जाति के ईसाइयों के बीच अंतर्विवाह नहीं होते और अंतभोज भी नगण्य हैं। उनके बीच झड़पें आम हैं। नीची जाति के ईसाई अपनी स्थिति सुधारने के लिए संघर्ष छेड़ रहे हैं, गिरजाघर अनुकूल प्रतिक्रिया भी कर रहा है लेकिन अब तक कोई सार्थक बदलाव नहीं आया है। ऊंची जाति के ईसाइयों में भी जातिगत मूल याद किए जाते हैं और प्रच्छन्न रूप से ही सही लेकिन सामाजिक संबधों में उनका रंग दिखाई देता है।

महान विचारक वीर सावरकर धर्मान्तरण को राष्ट्रान्तरण मानते थे। आप कहते थे 'यदि कोई व्यक्ति धर्मान्तरण करके ईसाई या मुसलमान बन जाता है तो फिर उसकी आस्था भारत में न रहकर उस देश के तीर्थ स्थलों में हो जाती है जहाँ के धर्म में वह आस्था रखता है, इसलिए धर्मान्तरण यानी राष्ट्रान्तरण है।'

इस प्रकार से प्राय: सभी देशभक्त नेता ईसाई धर्मान्तरण के विरोधी रहे हैं एवं उसे राष्ट्र एवं समाज के लिए हानिकारक मानते हैं। - *डॉ. विवेक आर्य*

प्रतिष्ठा में,

स्वास्थ्य चर्चा किसी भी प्रकार के बुखार को उतारने के लिए

1. बीज निकले मुनक्का 7, काली मिर्च 7, छिलका उतरे बादाम 7, छोटी इलायची 7 के दाने, कासनी व सौंफ 5-5 ग्राम को पानी में पीसकर 100 ग्राम पानी में डालकर एक चम्मच खांड मिलाकर प्रात: सायं पीयें।
2. छोटी पीपल, करौंजी, चिरायता, गेरू 5-5 ग्राम कूट छानकर इसमें 20 ग्राम फिटकरी भुनी मिलाकर कीकर की गूंद के पानी से चने बराबर गोलियां बनाएं। एक-एक गोली प्रात: सायं पानी से लें।
3. मैथी, मीठी सुरंजान, सौंठ असगंध 10-10 ग्राम काला नमक 5 ग्राम कूट छानकर 5 ग्राम प्रात: सायं भोजन के बाद गर्म पानी से लें। रोमेटिक बुखार ठीक हो जाता है।
4. सतचिरायता 1-1 ग्राम प्रात: सायं पानी से लें।
5. करंजुआ के बीज की गिरी, ढाक के बीजों की गिरी 10-10 ग्राम पानी में पीसकर चने बराबर गोलियां बना छाया में सुखा लें। एक गोली प्रात: सायं पानी से लें।
6. भुनी फिटकरी एक ग्राम खांड दो ग्राम मिलाकर इस प्रकार प्रात: सायं पानी से लें। इससे पारी का बुखार ठीक हो जाता है।
7. छोटी पीपल 20 ग्राम कूटछान कर 1-1 ग्राम प्रात: सायं शहद में मिलाकर चाटें। इससे बुखार खांसी दमा ठीक हो जाता है।
8. खाकसी (खूबकलां) 60 ग्राम दरदरा कूट लें। 6 ग्राम दवा पानी 125 ग्राम में खूब उबालें। फिर छानकर कम गर्म प्रात: सायं पीयें।
9. तुलसी के ताजे पत्ते 25 ग्राम, काली मिर्च 1 ग्राम पानी में पीसकर चने बराबर गोलियां बना छाया में सुखा लें। एक-एक गोली पानी से प्रात: सायं लें।
10. करंजवे की गिरी 30 ग्राम कायफल 15 ग्राम कूट छान लें। आधा ग्राम पानी से दिन मे तीन बार लें।
11. महासुदर्शन चूर्ण 5-5 ग्राम गर्म पानी से प्रात: सायं लें।
12. महासुदर्शन अर्क1/3 कप पानी मिलाकर प्रात:सायं लें।
13. चिरायता सत्व एक-एक ग्राम पानी से प्रात: सायं लें।
14. अमृतारिष्ट 4-4 चम्मच पानी मिलाकर भोजन के बाद दोनों समय लें। **साभार : चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद**

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह